https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.007

भारतीय संगीत की शैलियों का विकासः शास्त्रीय से आधुनिक रूझान तक

प्रो0 अनिता रानी
श्रीमती बी0डी0 जैन गर्ल्स
पी0जी0 कॉलेज (आगरा)
ईमेल;*dr.anita80@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 20.04.2025
Approved: 28.05.2025

प्रो0 अनिता रानी

भारतीय संगीत की शैलियों का विकासः शास्त्रीय से आधुनिक रूझान तक

Artistic Narration 2025, Vol. XVI, No. 1, Article No.07 pp. 051-057

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-june-2025-vol-xvi-no1
Referred by:
DOI:*https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.007*

सारांश

संगीत, प्रारम्भ से ही मानव की सभ्यता का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। ऐसा माना जाता है कि मानव सभ्यता के साथ ही संगीत का जन्म हुआ। संगीत प्रारम्भ से ही मानव सभ्यता की विकास यात्रा का सहभागी रहा है। भारत में प्राचीन काल से ही संगीत लोगों के जीवन का हिस्सा रहा है। भारतीय संस्कृति में संगीत की विभिन्न शैलियाँ पाई जाती है, जिनकी उत्पत्ति यहाँ के लोगों की विचारधारा एवं परिस्थितियों के परिवर्तन के आधार पर हुई है। भारत में पाई जाने वाली सांगीतिक शैलियों के अन्तर्गत शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, आदि प्रचलित है। समय के साथ इन सांगीतिक शैलियों में परिवर्तन आया है। इस बदलाव का कारण वर्तमान समय हुए तकनीकी विकास एवं पाश्चात्य संगीत का बढ़ता प्रभाव है। सर्वप्रथम संगीत का विकास वैदिक काल में, शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति के रूप में हुआ। उसके पश्चात धीरे–धीरे मानव संस्कृति में परिवर्तन के साथ – साथ संगीत की विभिन्न शैलियाँ बनी। वर्तमान समय की बदलती विचारधारा ने रीमिक्स, पॉप, फिल्मी संगीत आदि संगीत के प्रकारों की तरफ लोगों के रूझान को बढ़ाया है अतः वर्तमान समय में संगीत के विभिन्न नये प्रकार प्रचलित हुए हैं। जो आधुनिक समाज में अपना अहम स्थान बना चुके है।

मुख्य बिन्दु

भारतीय संगीत, संगीत की विभिन्न शैलियाँ, शास्त्रीय संगीत, उपशस्त्रीय संगीत, लोक संगीत, सुगम संगीत, आधुनिक संगीत के रूझान, निष्कर्ष

प्रो0 अनिता रानी

भारतीय संगीत

भारतीय संस्कृति में संगीत कला का विशेष महत्व है। भारत में संगीत को मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है। संगीत का प्रयोग यहाँ ना केवल मनोरंजन के लिए होता है बल्कि संगीत यहाँ के लोगों की भावनाओं को व्यक्त करने का एक सबल माध्यम है। संगीत यहाँ के लोगों के जीवन का एक अहम हिस्सा है। जीवन का प्रत्येक कार्य, बिना संगीत के, यहाँ अपूर्ण ही जाना पड़ता है। भारतीय समाज में कोई भी सामाजिक या धार्मिक अवसर बिना संगीत के पूर्ण नहीं होता। प्रत्येक अवसर पर संगीत, यहाँ की जीवन शैली में शामिल रहता है। भारतीय संगीत की उत्पत्ति के विषय में ऐसा माना जाता है कि इसकी उत्पत्ति देवताओं द्वारा हुई है। विद्वानों द्वारा माना जाता है कि "संगीत की उत्पत्ति आरम्भ में वेदों के निर्माता ब्रह्मा द्वारा हुई। ब्रह्मा ने यह कला शिव को दी और शिव के द्वारा सरस्वती को प्राप्त हुई।"[1] भारतीय संस्कृति में सरस्वती को संगीत एवं साहित्य की अधिष्ठात्री माना गया है। संगीत प्राचीन काल से ही यहाँ की सभ्यता का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। भारत में संगीत का प्रारम्भ वैदिक काल से भी पूर्व हो चुका था। समय के साथ–साथ मानव सभ्यता का विकास हुआ एवं मानव सभ्यता एवं संस्कृति में विभिन्न परिवर्तन होते गये। जिसका प्रभाव यहाँ के संगीत पर भी पड़ा। भारत में शास्त्रीय संगीत का प्रारम्भ वैदिक काल से माना जाता है। भारत में संगीत का प्रथम उल्लेख भरत कृत 'नाट्यशास्त्र' ग्रन्थ में प्राप्त होता है। वैसे तो नाट्यशास्त्र ग्रन्थ नाट्य पर आधारित था परन्तु इसके अन्तिम छः अध्याय संगीत से सम्बन्धित है। भारतीय संगीत में गायन, बादन एवं नृत्य इन तीनों कलाओं को बराबर महत्व प्राप्त है। यहाँ इन तीनों के मिश्रण से ही संगीत की उत्पत्ति मानी जाती है। प्राचीन काल से लेकर आज तक भारत में विभिन्न प्रकार के संगीत वाद्य यन्त्रों का निर्माण एवं विकास हुआ, जैसे– दुन्दुभि, नगाड़ा, तुरही, वीणा, सितार, बाँसुरी, तबला, हारमोनियम आदि। वर्तमान समय में डिजिटल वाद्यों का प्रभाव, यहाँ पर काफी बढ़ गया है।

भारतीय संगीत की विभिन्न शैलियाँ

भारतीय संगीत परंपरा अत्यन्त प्राचीन एवं समृद्ध रही है। भारत एक ऐसा देश है, जो सदा से ही परिवर्तनशील रहा है। अतः यहाँ का संगीत समय–समय पर नये –नये रूपों में विकसित हुआ है। संगीत के ये विभिन्न रूप संगीत की विभिन्न शैलियों के रूप में जाने जाते है। वर्तमान समय में भारत में संगीत की विविध शैलियाँ प्रचलित हैं, जैसे – शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, लोक संगीत एवं सुगम संगीत।

शास्त्रीय संगीत

भारतीय शास्त्रीय संगीत की जड़ें वैदिक काल से जुड़ी हुई हैं। शास्त्रीय संगीत का प्रारम्भ वैदिक काल से माना गया है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद इन चारों वेदों का रचना काल वैदिक काल के नाम से जाना जाता है। इन चारों वेदों में से सामवेद को संगीत से सम्बन्धित माना गया है। वैदिक काल में सर्वप्रथम तीन स्वरों उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित का प्रयोग किया जाता था। वैदिक काल के प्राराम्भ में स्वरों के लिए यम संज्ञा प्रयोग की जाती थी। विद्वानों द्वारा माना जाता है कि वैदिक काल से ही सात स्वरों की उत्पत्ति हो चुकी थी। जिन्हें क्रमशः क्रुष्ठ, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चुतुर्थ, मन्द्र एवं अतिस्वार कह कर पुकारा जाता था। वैदिक काल में ही सप्तक का विकास हो चुका था। माना जाता है कि वैदिक काल के स्वर आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत के काफी थाट के सामान थे।

भारतीय शास्त्रीय संगीत एक ऐसी वैभवशाली कला है जिसने हजारों वर्षों का सफर तय किया है। शास्त्रीय संगीत का जो रूप आज हमें प्राप्त होता है वह भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में हुए विभिन्न

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.007

परिवर्तनों का परिणाम है। शास्त्रीय संगीत शास्त्र के नियमों पर आधारित होता है अर्थात वह संगीत जिसमें राग के नियमों का पालन करते हुए एवं ताल शास्त्र के नियमों के आधार पर निश्चित स्वरों एवं लय का संयोजन करते हुए गायन किया जाता है, शास्त्रीय संगीत कहलाता है। शास्त्रीय संगीत रागों पर आधारित है। इसमें राग गायन के दौरान राग के नियमों का पालन आवश्यक होता है। इसमें प्रत्येक राग के स्वर भिन्न होते हैं एवं एक राग गाते समय दूसरे राग के स्वरों का प्रयोग वर्जित माना जाता है। वर्तमान में भारत में शास्त्रीय संगीत की दो पद्धतियाँ प्रचलित है, (1) हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत (2) कर्नाटकी शास्त्रीय संगीत। पहली है हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति, जिसे उत्तरी संगीत पद्धति के नाम भी जाना जाता है। यह पद्धति उत्तर प्रदेश, बंगला, बिहार, उड़ीसा, पंजाब तथा महाराष्ट्र आदि प्रान्तों में प्रचलित है। दूसरी है दक्षिणी संगीत पद्धति जो मैसूर, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु आदि दक्षिण के कुछ राज्यों में प्रचलित है। इन दोनों संगीत पद्धतियों में बहुत कुछ समानताऐं एवं विभिन्नताऐं प्राप्त होती है।

लगभग 11 वी शताब्दी के पश्चात मुगलों का भारत में आगमन हुआ। मुगलों ने उत्तर भारत को अपना केन्द्र बनाया एवं कई शताब्दियों तक यहाँ शासन किया। इसी कारणवश उत्तर भारत की संस्कृति एवं संगीत में अरबी, फारसी संगीत का मिश्रण प्राप्त होता है। वहीं दूसरी ओर दक्षिण भारतीय संगीत इन सभी प्रभावों से अछूता रहा है। भारतीय शास्त्रीय संगीत का सफर कई शताब्दियों से चला आ रहा है एवं शास्त्रीय संगीत के इस सफर के दौरान विभिन्न शास्त्रीय शैलियों का विकास हुआ जैसे– ध्रुपद, धमार, ख्याल, चतुरंग, त्रिवट एवं तराना।

ध्रुपद

ध्रुपद शैली, हिन्दुस्तानी संगीत की एक प्राचीन शैली है। माना जाता है कि इसकी रचना पन्द्रहवीं शताब्दी में हुए राजा मानसिंह तोमर द्वारा हुई थी। ध्रुपद शब्द 'ध्रुव' व 'पद' शब्दों के मेल से बना है। यह एक गंम्भीर प्रकृति की गायकी है। ध्रुपद को अधिक्तर लोग मर्दाना गीत भी कहते है। ध्रुपद गायन शैली का प्रचार पन्द्रहवीं शताब्दी में अधिक हुआ। उस समय के प्रसिद्ध संगीतज्ञों में स्वामी हरिदास, गोपाल, तानसेन, नायक बैजू आदि का नाम आता है। ये सभी संगीतज्ञ ध्रुपद ही गाते थे। ध्रुपद अधिक्तर ब्रजभाषा में होते हैं तथा इसमें वीर, श्रृंगार तथा शांत रस की प्रधानता होती है। ध्रुपद का गायन अधिक्तर पखावज के साथ ही होता है परन्तु आज कल तबले का प्रचलन बढ़ जाने से इसका गायन तबले के साथ काफी होने लगा है। ध्रुपद गायकी में खटके व तान के समान चपल स्वर समूहों का प्रयोग नहीं किया जाता। ध्रुपद गायकी में गमक का अधिक प्रयोग किया जाता है। प्राचीन काल में ध्रुपद की मुख्य चार बानियाँ, खंडार बानी, नौहार बानी, डागुर बानी, गोबरहार बानी प्रचलित थी। वर्तमान समय में ध्रुपद गायकी का स्थान ख्याल गायकी ने ले लिया है।

धमार

धमार गायन शैली एक प्राचीन शास्त्रीय गायन शैली है। इसमें लयकारी का विशेष महत्व है। धमार गायन शैली में अधिक्तर राधा, कृष्ण एवं ब्रज की होली का वर्णन प्राप्त होता है। धमार शास्त्रीय संगीत की एक विशिष्ट गायन शैली है, जिसमें ध्रुपद के समान गंम्भीरता रहती है। धमार शैली का गायन धमार ताल में होता है। इसमें भी ध्रुपद गायन शैली के समान गमक का अधिक प्रयोग होता है। धमार गायन शैली के साथ पखावज वाद्य का प्रयोग अधिक होता है। इस गायन शैली में अधिक्तर होली का वर्णन होता है। अतः कुछ लोग इसे होरी भी कहते है।

ख्याल

ख्याल शास्त्रीय संगीत की एक विशिष्ट शैली है। वर्तमान समय में हमारा शास्त्रीय संगीत रव्याल पर ही आधारित है। ख्याल की उत्पत्ति से पूर्व भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रमुख रूप से ध्रुपद का ही गायन किया जाता था। ख्याल फारसी भाशा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'कल्पना'। ''गीत के इस प्रकार में कल्पना का विशेष महत्व होने के कारण ही शायद इसे ख्याल की संज्ञा दी गई है''[2] ख्याल गायन शैली में राग के नियमों की रक्षा करते हुए आलाप, तान, बोल आलाप, बोल तान, खटका, मुर्की, सरगम आदि विभिन्न अलंकारों का प्रयोग करते हुए गायन किया जाता है। ख्याल गायन शैली में ध्रुपद धमार के समान लयकारी कर जोर न देकर, स्वरों के चमत्कार व स्वर–सौन्दर्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है। ख्याल गायन शैली के दो प्रकार प्रचलित हैं (1) विलम्बित ख्याल (2) द्रुत ख्याल।

1. **विलम्बित ख्याल–** विलम्बित ख्याल को बड़ा ख्याल भी कहते हैं। इसका गायन विलम्बित लय में किया जाता है। इसी कारण इसको विलम्बित ख्याल करते हैं। विद्वानों के अनुसार इसकी रचना जौनपुर के सुल्तान हुसैन शर्की द्वारा की गयी थी। विलम्बित ख्याल के दो भाग स्थायी तथा अंतरा होते हैं। इसमें शब्द बहुत कम होते हैं तथा इन्हीं शब्दों को लेकर बोल–आलाप व बोल–तान गाये जाते हैं। इसके साथ तबले का प्रयोग होता है तथा एकताल, झूमरा ताल, तिलवाड़ा ताल, आड़ाचार ताल व झपताल आदि तबले की तालों के साथ इसका गायन किया जाता है।

2. **द्रुत ख्याल–** इसे छोटा ख्याल भी कहा जाता है। इस गायन शैली का गायन द्रुत लय में किया जाता है। इसमें भी बड़े ख्याल के समान दो भाग स्थाई एवं अंतरा होते हैं। द्रुत ख्याल में आलाप, बोल–आलाप, तान, बोल–तान तथा सरगम आादि का प्रयोग किया जाता है। इसके गायन में विभिन्न स्वर सौन्दर्य के उपकरणों जैसे– कण, खटका, मुर्की आदि का खूब प्रयोग किया जाता है। इसकी रचना के विषय में विद्वानों द्वारा माना जाता है कि इसकी रचना चौदहवीं शताब्दी में अमीर खुसरो द्वारा की गई। द्रुत ख्याल का गायन अधिक्तर तीनताल, झपताल तथा एकताल में किया जाता है।

चतुरंग

चतुरंग शास्त्रीय संगीत की एक विशिष्ट गायन शैली है। चतुरंग में ख्याल के शब्द, पखावज अथवा तबले के बोल, तराना तथा सरगम का प्रयोग एक साथ किया जाता है। इसका गायन रव्याल के ही समान किया जाता है।

त्रिवट

जिस प्रकार चतुरंग का निर्माण चार वस्तुओं के मिलने से होता है उसी प्रकार त्रिवट गायन शैली में तीन चीजें, गीत के शब्द, तबले अथवा परवावज के बोल तथा सरगम मिली हुई रहती हैं। इसका गायन सुनने में बहुत आकर्षक लगता है।

तराना

तराना शास्त्रीय संगीत की एक विशिष्ट गायन शैली है। तराना में कुछ विशिष्ट शब्दों जैसे– नोम–तोम, तनन, ना दिरदिर, दानी–तदानी आदि का प्रयोग होता है। इसके दो भाग स्थाई व अंतरा होते हैं। इसका गायन विशिष्ट प्रकार से किया जाता है। इसके गायन के दौरान लय को धीरे– धीरे बढ़ाया जाता है तथा अंत में अति द्रुत लय पर पहुँचकर गायन को समाप्त किया जाता है। कुछ गायक तराना गायन में कहीं – कहीं तबला

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.007
या पखावज के बोलों का प्रयोग करते हैं। इसका गायन अधिक्तर द्रुत ख्याल के पश्चात किया जाता है। तराना लगभग सभी रागों में गाया जाता है। इसके गायन से पूर्व विशेष तैयारी की आवश्यकता होती है।

उपशास्त्रीय संगीत

उपशास्त्रीय संगीत भारतीय संगीत की एक प्रचलित गायन शैली है। उपशास्त्रीय संगीत की सबसे बड़ी विशेषता इसका भाव प्रधान होना है जिसके कारण यह श्रोताओं के हृदय को प्रभावित करती है। उपशास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति शास्त्रीय संगीत व लोक संगीत के संयोग से हुई हैं। इसमें शास्त्रीय संगीत के कठोर नियमों को शिथिलता प्रदान की जाती है। जहाँ शास्त्रीय संगीत में, एक राग का गायन करते समय किसी दूसरे राग का प्रयोग वर्जित होता है वहीं उपशास्त्रीय संगीत के गायन में एक साथ कई रागों का प्रयोग किया जाता है तथा स्वर के स्थान पर भाव को अधिक महत्व दिया जाता है। उपशास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत ठुमरी, दादरा, टप्पा, कजरी आदि शैलियों का गायन किया जाता है।

ठुमरी

उपशास्त्रीय संगीत में ठुमरी गायन शैली अत्यन्त प्रचलित है। इसका सम्बन्ध नवाबों के दरबार से माना जाता है। विद्वानों द्वारा माना जाता है कि ठुमरी का रचना लखनऊ के अन्तिम नवाब 'वाजिद अली शाह' द्वारा की गई। जिन्हें 'अरव्तर पिया' के नाम से जाना जाता है। ठुमरी का गायन चंचल प्रकृति के रागों जैसे– रवमाज, तिलक कामोद, देश, तिलंग, पीलू, भैरवी, काफी आदि में किया जाता है। इसमें कण, मींड आदि का विशेष प्रयोग किया जाता है। इसमें श्रृंगार रस की प्रधानता होती है। ठुमरी का गायन अधिक्तर दीपचन्दी तथा जतताल में किया जाता है। ठुमरी गायन के दौरान विभिन्न रागों की छाया दिखाई जाती है। जिससे गायन में विशिष्ट सुन्दरता आती है जो सुनने वाले के मन पर एक विशिष्ट प्रभाव डालती है। ठुमरी एक भाव प्रधान गायन शैली है जिससे विशिष्ट भावों का संचार होता है।

दादरा

दादरा उपशास्त्रीय संगीत की शैली है तथा यह ठुमरी से काफी मिलती जुलती है। दादरा शैली का गायन दादरा ताल में होता है अतः इसी कारण यह शैली दादरा कहलाती है। ठुमरी एवं दादरे का गायन काफी मिलता जुलता है परन्तु दादरे की लय एवं स्वरों का लगाव इसे ठुमरी से भिन्न बनाता है। दादरे की उत्पत्ति के विषय में कोई ठोस प्रमाण प्राप्त नहीं होते है किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इसकी उत्पत्ति का आधार लोक संगीत है।

टप्पा

टप्पा गायन शैली अर्ध–शास्त्रीय या उपशास्त्रीय गायन शैली है। माना जाता है कि पंचाब प्रान्त के ऊँट चराने वालों द्वारा इन गीतों का प्रवर्तन हुआ। यह एक ऐसा गीत हैं जिसमें हिन्दी मिश्रित पंजाबी भाषा का प्रयोग होता है। यह श्रगांर रस प्रधान गीत है। ''टप्पा संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है– उछलना, कूदना, छलांग, फर्क तथा एक प्रकार का चलता गाना; जो पंजाब में लोकप्रिय है।''[3] इस गायकी में स्वरों का चमत्कारिक प्रदर्शन किया जाता है। टप्पे अधिक्तर काफी, भैरवी, पीलू, झिंझोटी तथा खमाज रागों में गाये जाते है।

लोक संगीत

लोक संगीत एक ऐसी गायन शैली है जो जन–साधारण के हृदय से प्रवाहित होती है। ''लोक संगीत 'लोक' तथा 'संगीत' दो शब्दों के संयोग से बना है, जिसका अर्थ है– लोक के गीत या लोक अथवा लोगों

में प्रचलित गीत।''[4] लोक संगीत किसी स्थान विशेष की संस्कृति को दर्शाने का कार्य करता है। भारत में लोक संगीत की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। भारत में विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों के लोग एक साथ निवास करते है अतः यहाँ लोक गीतों का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। यहाँ विभिन्न तीज–त्यौहारों, सामाजिक व धार्मिक अवसरों हेतु विभिन्न प्रकार के लोक गीतों को गाने का प्रचलन है। भारत के प्रत्येक प्रान्त की संस्कृति एक दूसरे से भिन्न है इसी कारण यहाँ के लोक संगीत में भी भिन्नता देखी जाती है। जैसे– पंजाब प्रान्त के प्रसिद्ध लोक गीतों में हीर–रांझा, सस्सी– पुन्नू, लोरियों तथा लोक नृत्यों में भांगड़ा का प्रचलन है। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के लोक गीतों में रास– लीला, नौटंकी, रसिया, होली, बारहमासा, बन्ना, सोहर आदि प्रचलित है। भारत का राजस्थान प्रान्त लोक संगीत के क्षेत्र में अति समृद्ध है। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के लोक गीत एवं लोक नृत्य प्रचलित हैं। यहाँ के लोक गीतो में मांड, झूमर, गनगौर, तथा सावनी सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध हैं तथा ढोल नृत्य, घूमर नृत्य, गीदड़ नृत्य, भवाई, झूमर तथा अग्नि नृत्य आदि यहाँ के प्रसिद्ध नृत्य है।

सुगम संगीत

भारतीय संगीत के अन्तर्गत आने वाला सुगम संगीत अपनी स्वयं की कुछ विशिष्ट विशेषताऐं रखता है। यह सीखने एवं गाने में सरल होता है क्यों कि इसमें शास्त्रीय संगीत के समान रागों के कठिन नियमों का प्रयोग नहीं होता है। इसका गायन सरल होने के कारण यह भारत में काफी प्रचलित है। इसको लाइट म्यूजिक भी कहते है। इसके अन्तर्गत भजन, गज़ल आदि का गायन किया जाता है। सुगम संगीत में शब्दों, हाव–भावों एवं रंजकता का प्रयोग बडी कुशलता से किया जाता है। इसकी रचनाऐं, भिन्न– भिन्न प्रान्तों की विभिन्न भाषाओं में पाई जाती हैं। इसमें तबला वादन का प्रमुख योगदान रहता है।

आधुनिक संगीत के रूझान

वर्तमान समय परिवर्तन का समय है। बदलती व विकसित होती तकनीकों का प्रभाव, भारतीय संगीत पर अत्यधिक पड़ा है। वर्तमान में संगीत निर्माण हेतु विभिन्न तकनीकों का प्रयोग होने लगा है फलस्वरूप संगीत अब रीमिक्स एवं पॉप जैसे नये रूपों में सामने आया है। जहाँ एक और शास्त्रीय संगीत एवं पारम्परिक संगीत अभी भी प्रासंगिक है वहीं पॉप, हिप–हॉप, रीमिक्स, रॉक आदि जैसे इलैक्ट्रॉनिक संगीत के नये रूपों ने भारतीय संगीत को एक नई दिशा दी है।

आधुनिक भारतीय संगीत में इलेक्ट्रॉनिक संगीत की शैलियों ने आज के युवाओं को काफी प्रभावित किया है। किसी पुरानें रिकार्ड किए गये गाने को नये तरीके से बनाने को या पुराने गाने की मूल रिकॉर्डिंग में बदलाब करके बनाए गये संस्करण को रीमिक्स कहते है। संगीत का यह नया रूप आज के युवाओं को लुभाने का कार्य करता है। जहाँ शास्त्रीय संगीत केवल शास्त्रीय संगीतज्ञों तक ही सीमित रहता है वहीं आज, आधुनिक संगीत सरल होने के कारण सभी बच्चों व युवाओं की जुबान से सुना जा सकता है। वहीं पॉप म्यूजिक जोशीला एवं द्रुत लय पर आधारित होता है जो युवाओं को नृत्य के लिए प्रोत्साहित करता है इसी कारण यह वर्तमान युवाओं में अत्यधिक प्रचलित है। वर्तमान समय में फिल्मी संगीत एक ऐसा संगीत है जिसे आज हर उम्र के लोगों द्वारा पसंद किया जाता है। फिल्मी संगीत में हर प्रकार के संगीत का मिला जुला रूप प्राप्त होता है। आज भारतीय फिल्म संगीत में शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, लोक संगीत, रीमिक्स, पॉप एवं रैप आदि सभी प्रकार का संगीत सम्मिलित है। इसी कारण यह आज, लोगों को काफी पसंद आता है।

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.007

निष्कर्ष

भारतीय संगीत की शैलियाँ अपने आप में विशिष्ट शैलियाँ हैं। संगीत की शैलियों का विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो समय, स्थान एवं समाज के बदलावों के साथ अनुकूलित होती है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की जड़े काफी गहरी है लेकिन आधुनिक संगीत शैलियों जैसे– फिल्म संगीत, पॉप, रॉक एवं इलैक्ट्रॉनिक संगीत ने शास्त्रीय संगीत को एक नये रूप में प्रस्तुत किया है शास्त्रीय संगीत एवं आधुनिक संगीत के इस संयोग ने भारतीय संगीत को विश्व प्रसिद्ध बनाया है। भारतीय संगीत की विविधताऐं यह दर्शाती हैं कि संगीत चाहे शास्त्रीय हो या आधुनिक यह हमेशा अपनी संस्कृति, भावनाओं व समाज की स्थिति को दर्शाने का कार्य करता है।

सन्दर्भ

1. वसंत, संगीत विशारद, प्रकाशक–संगीत कार्यालय हाथरस, संस्करण–23,1999 पृष्ठ–**12**
2. कुमार, अशोक 'यमन', संगीत रत्नावली, प्रकाशक– अभिशेक पब्लिकेशन्ज, एस0सी0ओ0 57–59 सेक्टर 17–सी चण्डीगढ़, पुनर्मुद्रण–2021, पृष्ठ–**255, 251**
3. प्रो0 श्रीवास्तव, हरिश्चन्द्र, राग परिचय, भाग–दो, प्रकाशक– संगीत सदन प्रकाशन 134 साउथ मलाका, इलाहाबाद, 2008, पृष्ठ–**197**
4. रीमिक्स का मतलब सुपरहिट गानों को ट्रिब्यूट देना है। www.bhaskar.com
5. Wikipedia.org